SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन

सुभाष चन्द्र पाल, शोधार्थी, आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author

सुभाष चन्द्र पाल, शोधार्थी,
आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/02/2023
Revised on : -----
Accepted on : 03/03/2023
Plagiarism : 03% on 22/02/2023

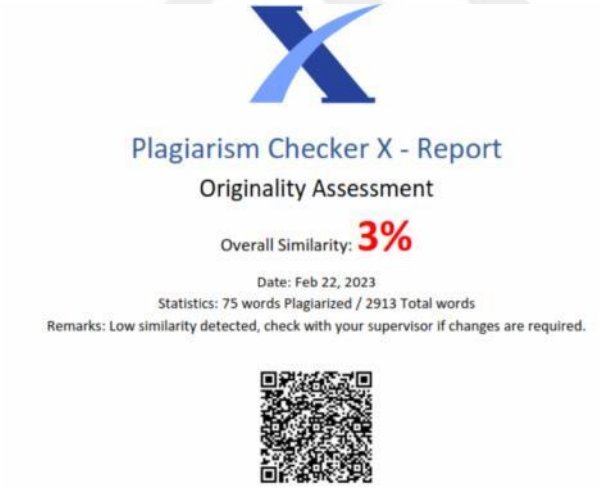

शोध सार

मानव जीवन के व्यवहारिक तीन पक्ष होते है: ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियाशीलता। इन तीन पक्षों से मानव का समुचित उन्नति होती है। शिक्षक के व्यवसायिक निष्ठा से राष्ट्र का विकास होता है, क्योंकि अध्यापक ही अग्रिम पीढ़ी के नागरिकों के नैतिक चरित्र का निर्माता, मानवीय मूल्यों का निर्माता और अनुशासन का स्तम्भ है। ड्रेबर के अनुसार "शिक्षा एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहार को ढाला तथा परिवर्तित किया जाता है।" वर्तमान शोध आलेख में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया जायेगा।

मुख्य शब्द

कार्य सन्तुष्टि, अनुशासन, व्यवसायिक निष्ठा, मानवीय मूल्य.

प्रस्तावना

वैदिक काल से भारतीय समाज के कर्णधार और भविष्य निर्माता अध्यापक ही रहे है क्योंकि अध्यापक विद्यार्थियों को शिक्षा देते है जिससे वे अग्रिम भविष्य के कुशल नागरिक बने। वर्तमान समय के वैज्ञानिक और तकनिकी के दौर शिक्षा प्राचीन समय से और अधिक आवश्यक है। वर्तमान में मानव शिक्षा के प्रति और अधिक जागरूक है, परन्तु व्यवहारिक शिक्षा के रूप में शिक्षण कार्य को प्रभावशाली तरीके से करने में अध्यापकों को कार्य संतुष्टि या अपने व्यवसाय के प्रति सन्तुष्टि या समायोजन का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है, जिससे मानसिक प्रक्रिया और संवेगों को परिष्कृत किया जा सके। अध्यापक का पद प्रर्दशक के रूप प्रतिस्थापित किया गया है।

"अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञजन शलाकया।
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

जिसने ज्ञार्नाजनरूप शलाका से अज्ञान रूप अंधकार से अंध हुये लोगों की आंखे खोली, ऐसे गुरू को सादर प्रणाम्।

वैदिक काल में छात्रों के भविष्य निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका आदर्श गुरू की होती थी। फ्रावेल के शब्दों में ''विद्यालय एक बाग है, छात्र कोमल पौधा है और शिक्षक कुशल माली है। अध्यापक अपनी कुशलता से पौधे का सर्वोत्तम और समुचित रूप से विकास करता है। शिक्षा की गुणवता इस बात पर निर्भर करती है कि उस राष्ट्र के पास किस स्तर के अध्यापक उपलब्ध है। अध्यापन का कार्य क्षेत्र में कार्य संतोष अध्यापक के लिये इस प्रकार की अभिप्रेरणा है जिसके फलस्वरूप अध्यापक अपना कार्य संपादित करने में आनन्द की अनुभूति करता है। यह कार्य संतुष्टि केवल आन्तरिक विषय है, जबकि कार्य संतोष किसी अध्यापक में अंतनिर्हित उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है जिसे एक शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में दीर्घ कालीन बनाये रखने का प्रयास करता है। अरस्तु के कथनानुसार, ''स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का विकास होता है।''

शोध का कार्य क्षेत्र

21 वीं शताब्दी में भौतिकता का अत्याधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के कारण शिक्षा में अमूल्य चूक परिवर्तन दिन प्रतिदिन अत्याधिक तीव्र गति से हो रहे है। शिक्षको द्वारा प्रभावी शैक्षिण प्रक्रिया सम्पादित किये जाने से उनके अनुभव ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान होता है। अध्यापक अपनी योग्यता के बल अपने शिक्षण कार्य सफल एवं प्रभावशाली हो सकते हैं।

कोठारी अयोग ने शिक्षक कार्यक्रमों में अलगाव दूर करने के क्रम में जो बिन्दु सुझाए है, उनमें उचित समझा गया कि विद्यालय सुधार कार्यक्रम के नियोजन और क्रियान्विति में शिक्षको की कार्य संतुष्टि का होना आवश्यक है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा – 2005 में भी ज्ञान प्राप्ति में बच्चे द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका पर फिर से जोर दिया गया है और सामाजिक सांस्कृतिक दर्शन में ''ज्ञान का सामाजिक निर्माण'' एक महत्वपूर्ण सिद्वान्त रहा है। इस दिशा में अध्यापकों के लिये नवीन प्रयोगों व शोध कार्यो के साथ राष्ट्रीय शैक्षिण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

सम्बन्धित शोध साहित्य

(अ) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य सन्तुष्टि से सम्बन्धित शोध

ओलाडेवा, एस.ए. (2001) ने शिक्षकों के शिक्षण के प्रति अभिव्यक्ति का अध्ययन किया, उन्होंने अन्य आयाम या अवसर की उपलब्धता, प्राप्ति, जॉब का विकास, उत्तरदायित्व देना, विद्यालय में पर्यवेक्षण, प्रधानाचार्य के साथ व्यवसायिक वैयक्ति अन्तः क्रिया का अध्ययन किया गया। ऐसे शिक्षक जो व्यवसायिक शिक्षक थे उनकी सार्थक रूप से अभिव्यक्ति सकारात्मक थी लेकिन उनका समाज में आर्थिक रूप से प्रभाव कम था।

ए.एम. यूसुफ, मायद एल. कदतोंगे तथा दसू अमीर साबिद ओ. यूसुफ (2013) "The significant relationsip between work performance & Job satisaction in philippines" शीर्षक से अध्ययन किया इनका उद्देश्य था कोटावेटो सिटी (फिलीपीन्स) के कार्य निष्पादन तथा कार्य सन्तुष्टि के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना इसमें वर्णात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। उपकरण में सर्वेक्षण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा कार्य निष्पादन के मध्य का सहसम्बन्ध है और आयु, उच्चतम शिक्षा एवं सेवा की अवधि के आधार पर कार्य सन्तुष्टि में महत्वपूर्ण है, लिंग तथा नागरिकता स्तर के आधार पर कार्य सन्तुष्टि में अंतर है।

रावर्ट एवं फ्रांसिस (2002) ने प्राथमिक विद्यालयों ने प्रधानाचार्य एवं उनके कार्य सन्तुष्टि प्रभावशीलता के बीच सम्बन्धों का अध्ययन किया। प्रधानाचार्य अधिक से अधिक समय अपने कार्य मूल्यांकन एवं स्टॉफ का पर्यवेक्षण करने में खर्च करने की तुलना में पेपर का कार्य करने एवं अपने रिकार्ड को सही रखने में, जबकि प्रधानाचार्य मूल्यांकन एवं स्टॉफ के क्रियाकलापों का पर्यवेक्षण करते थे तो वह काफी सन्तुष्ट थे, तुलना में पेपर का कार्य एवं रिकार्ड रखने में।

(ब) भारतीय संदर्भ में कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन

व्यास, एम.बी. (2001) ने प्राथमिक शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का उनके लिंग, वैवाहिक स्थिति एवं शैक्षिक योग्यता के संदर्भ में अध्ययन किया। आदर्श के रूप में न्यादर्श पोरबन्दर और जूनागढ़ जिला के 3000 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को गुच्छ प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया जिसमें 1770 पुरूष शिक्षक तथा 1230 महिला शिक्षिकायें थी। शोधार्थी ने स्वनिर्मित कार्य सन्तुष्टि इन्वेन्टरी का प्रयोग आंकड़े संग्रह के लिये किया। आंकड़ों का विश्लेषण के लिए सांख्यिकी तकनीकी, मध्यमान, मध्यांक, मानक विचलन तथा काईवर्ग का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिणाम प्राप्त हुए कि विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया। पुरूष शिक्षकों की वैवाहिक स्थिति से उनकी कार्य सन्तुष्टि प्रभावित थी। शिक्षकों की निम्न शैक्षिक योग्यता से उनकी कार्य सन्तुष्टि प्रभावित पाई गई।

जोशी हरिमा एल. (2004) ने गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षित शिक्षक तथा बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की कार्य सन्तुष्टि पर अध्ययन किया गया। न्यादर्श के रूप में बी.एड. प्रशिक्षण प्राप्त तथा 120 बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों को गुच्छ प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। अध्ययनोपरांत निष्कर्ष प्राप्त हुए कि बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की कार्य सन्तुष्टि एवं उनके व्यवसायिक जुड़ाव में सकारात्मक सार्थक सम्बन्ध पाया गया। ऐसे शिक्षक जो एकांकी परिवार से आते हैं उनके व्यवसायिक जुड़ाव संयुक्त परिवार के शिक्षिकों से अधिक था।

पल्ला (2012) ने पंजाब में व्यवसायिक विद्यालयों के शिक्षिकों में कार्य सन्तुष्टि पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य व्यवसायिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों तथा ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि स्तर का पता लगाना एवं उनकी तुलना करना। इस अध्ययन से परिणाम प्राप्त हुए कि विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित व्यवसायिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अंतर पाया गया।

गंथुगु (2013) ने केन्या के मोमवासा जिले के माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की कार्य सन्तुष्टि का उनके उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। आंकड़ों के संग्रह हेतु मोमवासा के 37 माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों को प्रश्नावली प्रदान की गई जिनमें 30 प्रश्नावलियों को ही प्राप्त किया गया। अध्ययन के उपरांत पाया गया कि जो प्रधानाचार्य अपने कार्य के प्रति सन्तुष्ट थे, उनकी उपलब्धि उच्च थी।

सिंह, जयप्रकाश (2013) ने उत्तरप्रदेश के स्ववित्त पोषित कॉलेजों में कार्यरत् शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में सम्बन्ध पर अध्ययन किया। अध्ययन हेतु यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा 180 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया गया। आंकड़ों के संग्रह के लिए कार्य सन्तुष्टि मापनी तथा शिक्षक दक्षता मापनी का प्रयोग किया गया। अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष पाया गया कि शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि एवं शिक्षण दक्षता में 0.05 स्तर पर सम्बन्ध सकारात्मक एवं सार्थक पाया गया एवं उनमें दक्षता समान पायी गयी। शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षकों को कार्य सन्तुष्टि एवं शिक्षक दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। पी.जी., एम.एड. शिक्षकों के प्रशिक्षण तथा पी.जी., एम.एड. नेट/पी.एच–डी. शिक्षकों के प्रशिक्षण की कार्य सन्तुष्टि एवं कार्य क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय वह जहाँ कक्षा 11 एवं 12 विद्यार्थी अध्ययन कार्य किसी संस्था में आकर नियमित रूप से ग्रहण करते हैं उन्हें हम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के नाम जानते हैं। यहाँ पर विद्यार्थियों की उम्र किशोरावस्था की होती जो कि काफी अहम होती है जिसमें व्यक्ति अपने जीवन के सम्बन्ध काफी चिंतन और समझ आ जाती है।

अध्यापक

अध्यापक शब्द अपने आपमें काफी महत्वपूर्ण है जो कि विद्यार्थियों के साथ–साथ समाज को एक सुधारात्मक

दिशा देने का कार्य करते हैं। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कार्य करते हैं और अपने ज्ञान से विद्यार्थियों में ज्ञानन्नोति करते हैं जिससे समाज के लिये कल्याणकारी नागरिक तैयार हो सके।

समस्या में प्रयुक्त शब्द परिभाषीकरण

कार्य सन्तुष्टि

कार्य सन्तुष्टि किसी व्यक्ति की कार्य प्रति सकारात्मक एवं अभिवृत्ति है। कार्य सन्तुष्टि से यह अभिप्राय है कि व्यक्ति किसी व्यवसाय में कितना अपने को सुरक्षित महसूस करता है और उस व्यवसाय के प्रति कितना ईमानदारी पूर्वक कार्य करता है। यह एक प्रकार की अभिप्रेरणा है जिसके पश्चात् व्यक्ति अपने व्यवसाय के प्रति आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है।

कार्य सन्तुष्टि को आंतरिक अनुभूति के द्वारा महसूस किया जाता है, किसी रूप में इसकी सामूहिक व्याख्या नहीं की जा सकती।

वुलक के अनुसार, ''कार्य सन्तुष्टि एक अभिवृत्ति है जो बहुत सी चाही और अनचाही अनुभवों के परिणाम हैं जिसमें व्यक्ति के अपने कार्य के प्रति जुडाव को परिलक्षित करता है।''

गिलमर के अनुसार, ''कार्य सन्तुष्टि या असन्तुष्टि विविध अभिवृत्तियों के परिणामस्वरूप हैं जिसमें व्यक्ति सम्बन्धित कार्य को और जीवन में सामान्य अपने कार्य से रहता है।

ए.एस. रेबर के अनुसार ''कार्य सन्तुष्टि किसी व्यक्ति की कार्यस्थल के वातावरण से संबंधी आधारभूत कारक है जिसको व्यक्ति की संवेदनात्मक अभिवृत्ति व मूल्य प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन में कार्य सन्तुष्टि के निम्नलिखित चार पक्ष लिये गये हैं:

- कार्य स्थिति के अनुसार कार्य सन्तुष्टि।
- वेतन, सुरक्षा और प्रमोशन सम्बन्धी सन्तुष्टि।
- शिक्षण, प्रशासनिक नीतियों व संगठनात्मक ढांचे से संबंधी कार्य सन्तुष्टि।
- प्रशासनिक कार्मिकों की कार्य करने की योग्यता व व्यूहरचना संबंधी सन्तुष्टि।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि जो कर्मचारी अपने व्यवसाय में सन्तुष्ट है वे स्वस्थ मानसिक सन्तुलन रखते हैं। स्वस्थ मानसिक स्वस्थ व्यक्ति को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है और उसके कार्य करने की क्षमता में वृद्धि देखी गई है। अनेक शोधों से यह प्राप्त हुआ खराब स्वास्थ्य के व्यक्ति की कार्य करने की मनोदशा का प्रभाव नकारात्मक देखा गया। अतः व्यक्ति के कार्य असन्तोष को बचाये रखने के लिए वह केवल जीविकोपार्जन का साधन मात्र न हो बल्कि उसे अपने कार्य के उद्देश्य प्राप्त करने की प्रेरणा मिले और अपने भविष्य व राष्ट्र के भविष्य को प्रस्तावित कर सके।

कार्य संतुष्टि का अर्थ एवं परिभाषा

कार्य संतुष्टि से तात्पर्य है कि व्यक्ति जिस व्यवसाय में है उसके प्रति उसका दृष्टिकोण क्या है। उसने जिस कार्य का चयन किया है उस कार्य के लिये पूर्ण निष्ठा और पूर्ण मनोयोग है। कार्य संतुष्टि (Job Satisaction) को कई तरह से परिभाषित किया जा सकता है। समाज के कुछ लोग इसे समझते कि व्यक्ति अपनी नौकरी (Job) से कितना संतुष्टि है। व्यक्ति अध्यापन कार्य को चुना उस व्यवसाय से कितना संतुष्ट है तथा वर्तमान दशा से प्रसन्न है।

सिन्हा, डी. व शर्मा के.सी. के अनुसारः व्यवसायिक संतुष्टि का संबंध व्यक्ति की नौकरी से है तथा समाज में व नौकरी में सामान्य तालमेल से भी काम का संबंध है।

सैय्यद, के.जी. के अनुसारः अध्यापन आज भी अनाकर्षक व्यवसाय है जिसे अधिकतर लोग अन्तिम व्यवसाय के रूप में स्वीकार करते है।

अध्यापक की कार्यसंतुष्टि के निम्न क्षेत्र हैः

- वेतन और पदोन्नति।
- नौकरी की शर्त व सुरक्षा।
- अपने व्यवसाय व संस्था के प्रति अभिरूचि।
- सहभागी पाठ्य सहभागी और अन्य क्रियाए।
- प्रधानाध्यापक, प्रबंध समिति व अध्यापकों से संबंध।

हम किसी न किसी वातावरण में रहते है और वह हम जीविकोपार्जन के लिये व्यवसाय का चयन करते है। उसी भांति अध्यापक का व्यवसाय शैक्षिण संस्था में अध्यापन कार्य करना जिससे यह महसूस किया जाता है कि आप अपने व्यवसाय से कितना संतुष्टि है।

प्रस्तावित शोध कार्य की उपादेयता

अध्यापक हमारे भविष्य का निर्माता है। उसके कंधो पर नवीन पीढ़ियो के भविष्य को सुनिश्चित करना और उन्हें सशक्त मार्ग प्रदान करना है जिससे वे एक नैतिक एवं आदर्श युक्त नागरिक बन कर हमारे देश हित में सहायक हो सके। इस समय अध्यापकों के लिये कुशल प्रशिक्षण व्यवस्था कि जाये जिससे बदलते परिवेश, नवीन व्यवहारिक तकनीक एवं वैज्ञानिक ज्ञान का समागम हो सके जिससे वह नवीन विद्यार्थियों का एक कोलोवरेटिव प्रकार का ज्ञान को प्राप्त कर सकें। नई शिक्षा नीति में ऐसी संकल्पना है कि शिक्षा जन–जन की पहुँच में हो एवं शिक्षा में गुणात्मक एवं मात्रात्मक और नवाचार से परिपूर्ण की कल्पना की जा रही है।

प्रस्तुत शोध में शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि का लिंग, क्षेत्र, जाति और अनुभव के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। इन सभी पहलुओ की दृष्टि से इस अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व सिद्ध होता है क्योंकि आज इन सभी पहलुओ के शोध के अभाव में अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि की पृष्टभूमि को ठीक से नही समझा जा सकता है। उपर्युक्त संदर्भ में अध्यापन आदतो के शोध के पश्चात् हम शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के विकसित होने की तह में जाकर अध्ययन कर सकते है इसलिये अध्यापकों की कार्य संतुष्टि को जानना तथा सुझाव देना आवश्यक है।

समस्या कथन

वर्तमान अनुसंधान कार्य हेतु समस्या को प्रस्तुत शोध विषय ''राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन'' है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध विषय की प्रकृति के अनुरूप प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण अग्रांकित प्रकार से किया गया हैः

- राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि की तुलना करना।
- शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि में परस्पर तुलना करना।

शोध परिकल्पनाएँ

शोध विषय की प्रकृति के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाओं का निर्धारण अग्रांकित प्रकार से किया गया हैः

- ग्वालियर क्षेत्र के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध में प्रयुक्त विधि

शोध अध्ययन के विषय व स्वरूप देखते हुए प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध सीमा

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत मध्य प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा परिषद् से सम्बद्ध ग्वालियर जिला के नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये ग्वालियर जिला के 15 राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर 25 पुरूष एवं 25 महिला अर्थात् कुल 50 शिक्षकों का चयन किया गया है।

प्रयुक्त मापनी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में कार्यसंतुष्टि के मापन के लिये डॉ. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित Job Satisfaction Scale का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विधियाँ

प्रदत्तों के विश्लेषण द्वारा प्रदत्तों को अर्थपूर्ण बनाने के लिए मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी–अनुपात सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एंव व्याख्या

उद्देश्य 01: राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलना करना।

H_{01}: ग्वालियर क्षेत्र के राजकीय उच्चतर माध्यमिक के पुरूष व महिला अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी क्र.1: राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन, एवं टी–अनुपात

क्र. सं.	राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	संख्या **(N)**	माध्यमान **(M)**	मानक विचलन **(S.D.)**	मध्यमानों का अन्तर **(M_1 -M_2)**	मानक त्रुटि **(Q.D.)**	टी – अनुपात **(t-Value)**
01	पुरूष	25	296.00	58.55	9.64	14.19	0.68
02	महिला	25	286.36	37.40			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

0.05 सार्थकता स्तर असार्थक।

उपयुक्त सारणी 01 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि का मध्यमान 296.00 एवं 286.36 तक मानक विचलन क्रमशः 58.55 तथा 37.46 है। टी–अनुपात का मान 0.68 है जो 0.05 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कि ''राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'' स्वीकृत की जाती है इसलिए उपर्युक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में समानता है।

उद्देश्य 02: शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि में परस्पर तुलना करना।

H_{02} : शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक

अन्तर नहीं है।

सारणी क्र. 2: राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का माध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र. सं.	राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	संख्या (N)	माध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	मध्यमानों का अन्तर (M_1 -M_2)	मानक त्रुटि (Q.D.)	टी – अनुपात (t-Value)
01	शहरी	25	236.48	56.38	24.92	17.18	1.45
02	ग्रामीण	25	261.40	62.47			

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक

उपर्युक्त सारणी 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान क्रमशः 236.48 एवं 261.40 तथा मानक विचलन क्रमशः 56.38 तथा 62.47 है। टी–अनुपात का मान 1.45 है जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है अतः शून्य परिकल्पना कि ''शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत की जाती है इसलिये उपरोक्त उल्लेख के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शहरी एवं ग्रामीण राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि में समानता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य में शोध साहित्य के आधार पर कुछ परिणाम सामने आये हैं जिनके आधार पर निष्कर्ष निकाले गये हैं जो अग्रिम पंक्ति में वर्णित हैं:

- राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की महिला एवं पुरूष अध्यापकों की कार्य सन्तुंष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शहरी एवं ग्रामीण अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शोध अध्ययन का प्रभाव

किसी भी अध्ययन का शैक्षिक प्रभाव उसकी सार्थकता का द्योतक होता है। शिक्षा में छात्र, शिक्षक और सामाजिक परिवेश के पारस्परिक क्रिया शामिल है। यह तीन कारक संपूर्ण शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता और विफलता के लिये समान रूप से जिम्मेदार होते हैं। शिक्षार्थी की सफलता मुख्य रूप से शिक्षक की क्षमता पर निर्भर करती है। पूरे शैक्षिक कार्यक्रम को शिक्षक द्वारा नियंत्रित किया जाता है। वर्तमान समय विद्यार्थी अवसाद, चिन्ता, कुसमायोजन, भग्नासा जैसी समस्याओं से संघर्ष करते हैं इन सबके पीछे एक वातावरण की समस्या है जिससे व्यक्ति को निदान दिलाने के कार्य सन्तुष्टि आवश्यक व्यक्ति अपने कार्य में सन्तुष्टि है वही व्यक्ति इन अवसादों से बच जायेगा।

सुझाव

शोध के उद्देश्यानुसार स्थापित निष्कर्ष जहाँ एक और लक्ष्यपरक विशिष्ट सत्य की स्थापना करते हैं, वहीं दूसरी ओर भावी शोध हेतु दिशा भी प्रदान करते हैं। अतः इस दिशा में निम्न शोध कार्य भावी शोध हेतु अपेक्षित है:

- कार्य क्षमताओं एवं कार्य स्थायित्व के परिप्रेक्ष्य में सेवारत महिला एवं पुरूष अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन।
- महिला एवं पुरूष अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का विश्लेषणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन।

- माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- म.प्र. के व्यक्तिगत (प्राइवेट) माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन।
- म.प्र. के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

संदर्भ सूची

1. भटनागर, सुरेश (2010), *शिक्षा मनोविज्ञान,* मेरठ आर लाल बुक डिपो।
2. भार्गव, महेश (2010) *मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन,* आगरा : एच.पी. भार्गव बुक हाउस पृ. 220–235
3. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता अल्का (2008), *उच्चतर माध्यमिक शिक्षा मनोविज्ञान,* इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड।
4. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता अल्का (2007), *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,* इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड।
5. गैरेट, एच.ई. (1981) *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी,* दशम् संस्करण वाम्बे, बी.एफ. एण्ड संस।
6. गैरेट, ई. हेनरी (1989) *शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग,* नोयडा कल्याणी पब्लिकेशन पृ. 107–120।
7. गौड, शोभा, विश्वकर्मा ऋषिकेश (2016) गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि एवं प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
8. *Journal of socio education cultural research,* vol. 2, No. 5 July-Dec., 2016
9. कौल, लोकेश (2009), *मेथडालाजी ऑफ एजूकेशनल रिसर्च,* नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस।
10. पटनायक, एस.पी. और शर्मा बी.के. (2007), प्राथमिक विद्यालयों के सांगठनिक स्वास्थ्य और शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन, *जर्नल ऑफ टीचर एजूकेशन एंड रिसर्च,* नोएडा 2 (2) दिसम्बर 2007 पी वी 59–66।
11. शर्मा, कविता (2017) सेवारत, शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यवसायिक सन्तुष्टि के सन्दर्भ में उनके विद्यार्थियों शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।
12. *International Journal fo Education and Science Research Review,* August 2017, Volume 4, Isue 4. ww.ijesrr.org
13. सिंह, अरूण कुमार (2006), *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ,* वाराणसी, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन।
14. सुनील कुमार व नितिन कुमार वर्मा (2015), कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्ववित्त एवं अनुदान प्राप्त शिक्षक–शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
15. *IRJMS* Vol. 6 Isue 12 (Year 2015) ISN2250-1559 (Online)

****